INDIAN CULTURE: FEATURES & TRADITIONS:

भारतीय संस्कृति: विशेषताएँ व परम्पराएँ:

आर्यावर्त, भारतवर्ष, हिन्दुस्तान, इण्डिया, इंडस (ग्रीक) हिन्द (फ़ारसी) इंटू (चीनी) व अनेक नामों से जाने गये सैंधव सभ्यता, हड़प्पा सभ्यता, आर्य सभ्यता, वैदिक सभ्यता की युगयुगीन संस्कृति में विकसित हज़ारों साल की परिष्कृत बौद्धिक सम्पदा व पीढ़ी दर पीढ़ी उन्नत संस्कारों में हमारा विश्व में प्रमुख स्थान रहा। जब नील की सभ्यता, सुमेरिया, मेसोपोटामिया, ग्रीक व रोमन सभ्यताएँ लुप्त हो गयीं, भारत जीवन्त है। प्राचीनता में हम मिस्र, दजला-फ़रात, बेबीलोन के समकालीन सिन्धु सभ्यता के वारिस हैं जो लगभग ईसा से साढ़े तीन हज़ार साल पहले से ढाई हज़ार साल तक पनपी। सर इकबाल और डॉ॰ राधा कुमुद मुकर्जी अन्य देशों की तुलना में भारतीय सभ्यता को अधिक प्राणवान मानते हैं। भारत के पश्चिमोत्तर से लगातार हमले हुए, अनेक जातियाँ आयीं और यहीं की होकर रह गयीं। हमलावर विजयी हुए, उन्होंने शासन भी किया लेकिन भारतीय संस्कृति में समा गये। हूण, बैक्ट्रियन, सीथियन, कुषाण, यूनानी, मंगोल, तुर्क, यूरोपियन सभी आये और यहीं बस गये। आर्ययुग एवं महाकाव्य काल में आध्यात्म हमारी सनातन संस्कृति का मेरुदण्ड रहा। वैदिक धर्म के अलावा 'लाईट ऑव एशिया' बुद्ध, तीर्थंकर महावीर के जैन धर्म, शंकराचार्य के एकेश्वरवाद, बाबा नानक व कबीर तथा सूफ़ीयों के समन्वित करुणा, सहिष्णुता के उदार सिद्धान्तों की हर युग में मान्यता रही; भक्त कवियों व समाज सुधारकों ने दक्षिण से लेकर उत्तर तक प्रेम व सर्वधर्म समभाव का भाव जगाए रखा। धर्म प्रधान देश में सारे संसार को एक कुटुम्ब माना गया 'वसुधैव कुटुम्बकम'; समस्त प्राणियों की मंगलकामना की गयी, 'सर्वे भवन्तु सुखिन:'। बुद्ध ने घोष किया 'भवतु सब्ब मंगलम्'।

धर्म प्रधान देश की सहिष्णुता:

TOLERANCE

प्राचीन युग से वैचारिक स्वतंत्रता के नाते वैदिक देवताओं के साथ बहुदेववाद, मूर्तिपूजा, रामभक्ति, कृष्ण भक्ति, वैष्णव धर्म, शैव व लिंगायत धर्म, शाक्त धर्म व देवी पूजा, षट्दर्शन, अनीश्वरवाद, चार्वाक नास्तिकता, बौद्ध व जैन धर्मों का एक ही भूखण्ड पर फलना-फूलना; विदेशियों के साथ पारसी, इस्लाम, ईसाईत्व का भी आगमन व विस्तार। हिन्दू धर्म के अन्दर अनेक मत-मतांतर का फैलना, सबका सहअस्तित्व आश्चर्यजनक रूप से बना रहा। सहनशीलता भारतीय जीवन की सबसे बड़ी विशेषता रही। 'ऋग्वेद' की ऋचा "एक सद विप्रा बहुधावदन्ति" अर्थात् एक ही सत्य को ज्ञानी अनेक रूप में वर्णन करते हैं। भक्तिमार्ग, ज्ञानमार्ग, कर्ममार्ग सभी का आदर हुआ। बसवन्ना, रामानुज, निम्बार्क, मध्व, चैतन्य, कबीर, नानक, मुइनुद्दीन चिश्ती, निज़ामुद्दीन औलिया, गेसूदराज़ जैसे सन्त, प्रेम, भाईचारा के प्रवर्तकों ने भारतीय जनमानस को सींचा और यह 'गंगा-जमुनी संस्कृति' भी कहलायी। समन्वय की इसी महान संस्कृति में शकों से लेकर अनेक आक्रांता समा गए। अशोक महान् ने स्तम्भों पर खुदवाया कि "जो दूसरे के धर्म की निंदा करता है, वह अपने धर्म का अपमान करता है।" गुप्त शासक वैष्णव थे परन्तु उन्होंने सभी को धार्मिक स्वतंत्रता दी। यवन राजा मिलिन्द बौद्ध हो गया; हूण राजा मिहिरकुल शैव हो गया। इस्लाम का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव पड़ा और डॉ॰ ताराचन्द लिखते हैं कि भारतीय संस्कृति का भी इस्लाम पर गहरा प्रभाव स्पष्ट है। प्रो॰ डॉडवेल ने लिखा 'भारतीय संस्कृति महासमुद्र के समान है, जिसमें अनेक नदियाँ आकर विलीन हो जाती हैं।'

विविधता में एकता: UNITY IN DIVERSITY:

विशाल भारत अपनी अनोखी विविधता के नाते 'विश्व का लघुरूप' भी कहा जाता है। यहाँ की विचित्र भौगोलिक स्थिति में कहीं पहाड़ और बर्फ़ व ठंड है तो कहीं रेगिस्तान व

—2

UNITY IN DIVERSITY

गर्मी; कहीं तीन ओर से सागर हैं तो कहीं जंगल ही जंगल, कहीं दर्जनों नदियाँ तो कहीं द्वीप ही द्वीप। जलवायु की भिन्नता हमारे खानपान व वस्त्राभूषणों को भी विचित्र भिन्नता से भर देती है। हमारे चेहरों की आकृति, हमारे शरीर के रंग, हमारी कद-काठी, हमारी आँखें भी भिन्न हैं। कश्मीरी गोरा होता है तो मलयाली व तमिल काले और अन्य भागों के गेहुँए; नेफ़ा वालों के चेहरे मंगोलयाइड होते हैं शेष के सामान्य। हमारे उत्तर भारतीय रोटी चावल खाते हैं तो दक्षिण में इडली डोसा; कोई शाकाहारी है तो कोई मांसाहारी; तटीय लोग मछली खाते हैं। उत्तर में शटे पैंट आम है तो दक्षिण में कुर्ता-लुंगी। पूर्वोत्तर के लोगों की जीवन शैली पूर्णतः भिन्न है। भाषाएँ इतनी हैं कि एक-दूसरे को बस प्यार के संकेतों से समझ पाते हैं। उत्तर में हिन्दी-उर्दू आम बोली है तो दक्षिण में स्थानीय या अंग्रेज़ी। पूर्वोत्तर में बंगाली या स्थानीय या अंग्रेज़ी। बोलियाँ तो हर सौ-पचास मील पर बदल जाती हैं, उनके उच्चारण पूर्णतः भिन्न होते हैं। कहा जाता है 'कोस-कोस पे पानी बदले, दुई कोस पे बानी।' एक ही समाज में हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन, पारसी, बहाई, नास्तिक सभी साथ-साथ जी रहे हैं। हर नगर-गाँव में मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, गिरजा व बौद्ध विहार मिलते हैं। रंग-बिरंगे त्योहार हैं। नव वर्ष पर बैसाखी, खिचड़ी, बिहु, पोंगल, ओनम, विशु, मनाया जाता है। हिन्दू होली, दिवाली, दशहरा मनाते हैं तो मुस्लिम ईद-बकरीद; सिक्ख गुरुपरब मनाते हैं तो ईसाई क्रिस्मस, बौद्ध बुद्ध पूर्णिमा तो जैन महावीर जयन्ती। बंगाल में दुर्गा पूजा होती है तो बिहार में छठ, उत्तर में रामलीला तो महाराष्ट्र में गणपति उत्सव। विचित्र विभिन्नताओं की अनगिनत परम्पराओं का एक विराट रूप है 'भारत' जिसकी पहचान है 'अनेकता में एकता'।

TRADITIONS

परम्पराएँ: सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, कर्म सिद्धान्त, पुनर्जन्म में विश्वास, चारो पुरुषार्थ जैसे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को महत्व दिया गया। चार आश्रमों- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास को लेकर जीवन के सौ वर्षों को बाटा गया। सम्पूर्ण समाज को कर्म के आधार पर चार वर्णों- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र में भी रखा गया, यही व्यवस्था आगे चल कर अनेक जातियों में विभाजित हो गयी। संयुक्त परिवार में भारत जीता था जिसमें प्रेम, संयम, सहनशीलता, समानता, त्याग के आदर्श भरे रहे। बाहर से आयी अन्य संस्कृतियों से यूनानी, तुर्क, यूरोपीय अनेक परम्पराओं की ग्रहणशीलता भी हमारी पहचान रही। ऋग्वेद की ऋचा है कि अच्छे विचार चारो ओर से आने दो और छोटे से भी ग्रहण करो। 'गीता' ने कर्मवाद के सिद्धान्त को स्थापित किया, हिन्दू परम्परा में पाप-पुण्य के फल भोगने को पुनर्जन्म के सिद्धान्त को भी मान्यता मिली। दया, दान, सहिष्णुता, सन्तोष भारतीय संस्कृति के मुख्य गुण बने। स्वर्ग-नरक, मोक्ष, निर्वाण की परिकल्पना भी मज़बूत हुई। लोग धर्म भीरु व ईश्वर में आस्था, विभिन्न पूजा पद्धतियों से उपासना; चराचर जगत में प्रभु की सत्ता को माना जाता है। धर्मग्रंथों, प्राचीन धर्मस्थलों, विभिन्न धर्माचार्यों तथा विभिन्न धार्मिक उत्सवों के प्रति भी आकर्षित व समर्पित रहे हैं। समाज में सभी धर्मों व जातियों की सभी परम्पराओं का समादर भी है। अनेक सांस्कृतिक परम्पराओं का सुन्दर योग है यह जो निरन्तर गतिशील है। प्रो० हुमायूँ कबीर ने लिखा है कि भारतीय संस्कृति एकता, समन्वय तथा संयोग के उन्नति की गाथा है जो अमर रहेगी।

—उ

UNIVERSALITY

सार्वभौमिकता :- बी. ए. स्मिथ ने लिखा है कि भौगोलिक भिन्नता, राजनीतिक हलचलों,
रक्त, रंग, भाषा, वस्त्र, व्यवहार, सम्प्रदाय की विभिन्नताओं के बावजूद
एक गहरी एकता है। पं. नेहरू ने लिखा है कि भारतीयों की यह अनुपम एकता प्राचीन
और गहराई से जमी है। हिमालय से लेकर तीन महासागरों के तट तक हज़ारों मील में
रहने वालों पर हमले तो हुए पर भारत अडिग रहा। आर. सी. मजुमदार ने भारत नाम
में ही भौगोलिक एकता को परिलक्षित माना है। मौर्य युग से आज तक साम्राज्यों व वंशों
के नाम बदलते रहे पर भारत दृढ़ व स्थायी रहा। भारत के हर नागरिक में धर्म, जाति,
भाषा, प्रान्त के भेद से ऊपर एक समवेत राष्ट्रीयता की भावना सदैव से रही है।
रवीन्द्र नाथ टैगोर ने लिखा कि मानवता की अनेक धाराएँ इस महादेश में आयीं; आर्य,
अनार्य, द्रविण, चीनी, शक, हूण, पठान आदि आए और इसी महासमुद्र में खोकर एक
हो गये। भारतीय संस्कृति अरब व यूरोपीय संस्कृति का समागम मधुसूत्र बनी। चारो छोरों
पर अनेक जातियों के धामों का ऐतिहासिक संयोग हुआ। गंगा से कावेरी तक कहीं अमरनाथ
है तो कहीं त्रिपुरेश्वरी देवी, कहीं स्वर्ण गुरुद्वारा है तो कहीं जामा मस्जिद, कहीं चारो धाम हैं तो
कहीं गोवा के चर्च, कहीं अजमेर की दरगाह है तो कहीं बोध गया का महाविहार, कहीं काशी-
मथुरा है तो कहीं जैनियों का महाबलिपुरम्। कहीं नवसारी की अगियारी है तो कहीं बहाई
प्रार्थनागृह। प्राकृत-पाली व संस्कृत, तमिल-बांगला के देश में उर्दू व अंग्रेज़ी भी प्रचलित हुए,

HARMONY

हिन्दी जनभाषा का माध्यम बनती जा रही है। सर हरबर्ट रिज़ले ने लिखा कि प्राकृतिक,
सामाजिक, भाषा, रीति-रिवाज व धर्म सम्बन्धी अनेक विभिन्नताओं के होते हुए भी भारत
में हिमालय से केप कोमारिन तक सामाजिक जीवन में सहज एकरूपता दीखती है।
संस्कृति के निर्णायक तत्वों में भाषा, भूगोल, धर्म, इतिहास को माना गया है और इन चारो
मापदण्डों में भारत से अधिक अनेकता सम्पूर्ण पृथ्वी पर कहीं भी नहीं और यही हमारा
सर्वश्रेष्ठ गौरव है कि हज़ारों विभिन्नताओं को साथ लेकर हम सबसे पुरातन जीवित
संस्कृति हैं। भारत क्षेत्रफल में, जनसंख्या में विश्व का अग्रणी देश है, जातियों की दृष्टि
से यह एक आजायबघर है, लगभग 200 जातियों, 169 भाषाओं, 544 बोलियों
से अधिक यहाँ की स्थिति है। भारत उत्तर से दक्षिण तक 2000 मील, पूर्व से पश्चिम तक
2500 मील, कुल क्षेत्रफल 122.100 वर्गमील तथा जल सीमा 5000 मील है। उत्तर में हिमालय

CO-EXISTENCE

की पर्वतश्रेणियाँ, मध्य में गंगा का मैदानी उपजाऊ भाग, दक्षिण के पठार, पश्चिमी और
पूर्वी घाट के ऊपर 1 सौ 35 करोड़ भारतवासी रहते हैं। राधा कुमुद मुकर्जी ने लिखा है
कि मतो, पंथों, प्रथाओं, संस्कृतियों, धर्मों, भाषाओं, जातियों तथा सामाजिक संस्थाओं का
आजायबघर है भारत और यह जीवित सम्प्रदायों व आध्यात्मिक व्यवस्थाओं का आजायबघर
है। रामधारी सिंह दिनकर ने लिखा है कि भीतर से कुछ बंटा हुआ पर बाहर से एक है
भारत और यह इसकी सनातन विशेषता है। 'विष्णु पुराण' में लिखा है कि वह भारत
भूमि धन्य है जिसकी प्रशंसा के गीत देवता भी गाते हैं। ए. एल. बाशम ने भारत
को एक आश्चर्य की संज्ञा दी है 'The Wonder That was India'. 600 से अधिक छोटे-
छोटे राज्यों के फलने फूलने के बावजूद भारत की कला, संगीत, नृत्य की विधाओं में
एकत्व था; साहित्य में 'सत्यं शिवम् सुन्दरम्' की धारा बह रही थी। अजन्ता-एलोरा
की गुफ़ाओं से लेकर विशालकाय मंदिरों, मध्यकालीन स्थापत्य कला और भारोपीय
वास्तुकला तक भारतीय संस्कृति की सम्मिलित पहचान है। सहिष्णुता व सर्वधर्मसमभाव
इसकी रीढ़ रही है। 'अनेकता में एकता' भारतीय संस्कृति की प्राण वायु है। धरती की
प्राचीनतम संस्कृति के आज भी जीवन्त होने का एकमात्र कारण है इसकी विभिन्नताओं
में समन्वय की अनुपम धारा।